

पिक:- मिरची
वाण :- क्रांती, लाँग मॉन्टरी, रेवती, शक्ती, दुर्वासा, सुवर्णा, वैशाली, सिलेक्षण-101, सिलेक्षण-202, पुसा ज्वाला, जि-4.

हवामान :- उष्ण व समशीतोष्ण हवामानात मिरचीचे पीक चांगले येते. मिरची पिकास 20 सें.ग्रे. ते 35 सें.ग्रे. या दरम्यानचे तापमान चांगले. गोठणाऱ्या दवाचा पिकांवर अनिष्ट परिणाम होतो तसेच उच्च तापमान घातक ठरते कारण फुले गळून जातात.

जमिनीची मशागत :- नांगरणी करून उन्हाळ्यात जमीन चांगली तापू द्यावी, नंतर कुजलेले शेणखत एकरी 20-25 गाड्या जमिनीत मिसळून वखराच्या आडव्या-उभ्या पाळ्या देऊन जमीन चांगली भुसभुशीत करून सरी व वरंबे तयार करून वाफे बांधून द्यावेत.

जमिनीची निवड :- मध्यम ते काळी पाण्याचा उत्तम निचरा होणारी जमीन मिरची पिकास योग्य असते. हलक्या जमिनीत योग्य प्रकारे खत घातल्यास पीक चांगले येऊ शकते.

बिज प्रकिया वेळ/रासायनिक औषध:- रिडोमिल गोल्ड 02 ग्रॅम/किलो बियाणास ओलसर करून लावावे व अर्धा तास सावली मध्ये सुकवून मग पेरवे. वाफ्यावर डॅम्पिंग आफ रोखण्याकरिता 10 लि. पाण्यात 20 ग्रॅम रिडोमिल गोल्ड 10 दिवसांच्या अंतराने दोन वेळा वाफ्यात झारीने द्यावे.

पेरणीची वेळ:- खरीप पिकाची लागवड मे-जुलै महिन्यात आणि उन्हाळी पिकाची लागवड जानेवारी फेब्रुवारी महिन्यात करावी.

बियाण्याचा दर:- हेक्टेरी 250-300 ग्रॅम बियाणे लागते.

पेरणीची पद्धत :-जिरायती पिकासाठी सपाट वाफ्यावर रोपे तयार करतात. तर बागायती पिकासाठी गादी वाफ्यावर रोपे तयार केले जातात. बी पेरण्यासाठी 8 ते 10 सेमी अंतरावर वाफ्याच्या रुंदीला समांतर ओळी तयार करून , त्यानंतर या ओळीमध्ये दोन सेमी ओळीवर बियांची पातळ पेरणी करावी व बी मातीने झाकून टाकावे. बियाण्यांची उगवण होईपर्यंत वाफ्यांना दररोज झारीने पाणी द्यावे. बी पेरल्यानंतर 30 ते 40 दिवसांनी रोपे लागवडीस तयार होतात.

लागवडीचे अंतर 75 x 60 से. मी. किंवा 60 x 60 से. मी. किंवा 60 x 45 से. मी या अंतरावर पेरणी करावी.

रासायनिक खत मात्रा व खत देण्याचा कालावधी व वेळ

अ. क्र.	कालावधी	नत्र प्रमाण/ हेक्टेरी	स्फुरद प्रमाण /हेक्टेरी	पालाश प्रमाण/हेक्टेरी
1	लागवडीनंतर 10 ते 12 दिवसांनी	50	50	50
2	30 दिवसानंतर	25	25	25
3	60 दिवसानंतर	25	00	00

तसेच 50 किलो मॅग्नेशियम सल्फेट + 25 किलो झिंक सल्फेट + 5 किलो बोरॉन हेक्टेरी वापरावे.

रोग व कीड नियंत्रण

खतासोबत फरटेरा (डूपौड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिंजेटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रोग/ कीड	औषधाचे नाव	मात्रा प्रति लि पाण्यात
1	मररोग	रिडोमिल	1.2 ग्रॅ. प्रति लि.
2	फ्युझारीयम	अलिएट किंवा बाविस्टीन	01 ग्रॅ. प्रति लि.
3	भुरी	सल्फर	02 ग्रॅ प्रति लि.
4	मावा, फुलकिडे	इमिडाक्लोरपीड	04 मि. ली प्रति 10 लि.
		एक्टरा	06 ग्रॅ प्रति 15 लि.
5	पांढरी माशी	लॅनो	02 मि. ली प्रति लि.
		पेगासस	01 ग्रॅम प्रति लि.
6	कोळी (माईट)	सल्फर	02 ग्रॅ प्रति लि.
		मॅजिस्टर	02 मि. ली प्रति लि.
7	फळे पोखरणारी अळी	प्रोफेनोफॉस	01 मि. ली प्रति लि

आंतरमशागत :- आवश्यकतेनुसार खुरपणी करून पीक स्वच्छ ठेवावे. जमिनीत हवा खेळती राहिल याची काळजी घ्यावी. फुले येण्याच्या सुमारास झाडांना भर लावावी म्हणजे झाडे कोलमडणार नाहीत.

पाणी व्यवस्थापन:- मिरची पिकास माफक पण वेळेवर पाणी देणे गरजेचे असते. पाण्याचे प्रमाण कमी किंवा जास्त झाल्यास फुलाची गळ होते. पावसाळ्यात 15 दिवसांचा अंतराने, हिवाळ्यात 8-10 दिवसांचा अंतराने व उन्हाळ्यात 4-5 दिवसांचा अंतराने पाणी द्यावे.

पीक काढणी किंवा कापणी :- मिरचीचे पीक वेळेवर काढणे महत्वाचे आहे. पहिला तोडा 50-60 दिवसांनी करावा. सुरुवातीला 4-5 दिवसांनी व नंतर 8 दिवसांनी फळांची काढणी करावी. हिरव्या मिरचीस वर्षभर मागणी असते. हिरव्या मिरचीचे 10-12 तोडे होतात. लाल मिरचीसाठी पहिले हिरव्या मिरचीचे दोन तीन तोडे करावेत व त्या पूर्ण लाल झाल्यावर तोडणी करावी. लाल मिरचीची काढणी 100 दिवसांनी सुरु होते.

टीप: वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधन केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भौगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणांमुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

मिर्च
किस्में :- क्रांती, लाँग मॉन्टरी, रेवती, शक्ती, दुर्वासा, सुवर्णा, वैशाली-9, सिलेक्षण-101,
सिलेक्षण-202, पुसा ज्वाला, जि-4, रेवती सुपर, क्रांती सुपर, पि सी -१, सिडको ज्वाला, सिलेक्शन -09, सिलेक्शन-41, अमृता.

जलवायु: मिर्च गर्म मौसम की सब्जी है। इसकी सफल खेती वैसे क्षेत्रों की जा सकती है जहाँ वार्षिक बारिश 60-150 सेंटीमीटर होती हो। ज्यादा बारिश इसे नुकसान पहुंचाती है। तापक्रम समान्य से ज्यादा एवं कम-दोनों अवस्था में इसके उपज को कम करता है। फूल आने एक समय गर्म एवं सुखी हवा फूल-फल को गिरा कर उपज कम करती है।

खेत की तैयारी: 4-5 गहरी जुताई और हर बार जुताई के उपरान्त पट्टा देकर खेत को अच्छी तरह तैयार कर लें। इसी समय अच्छी तरह सड़े गोबर की खाद 10 टन प्रति एकड़ के हिसाब से उपयोग करें। खाद यदि अच्छी तरह सड़ा न होगा तो दीमक लगने का भय रहेगा।

मृदा: पोषक तत्वों से भरपूर बलुई-दोमट मिट्टी इसके लिए आदर्श है। मृदा में ऑक्सीजन की कमी इसके उपज को कम करता है। अतः इसके खेतों में जलनिकास की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए

बीज उपचार: - रिडोमिल गोल्ड 02 ग्राम / किग्रा बीज को नम करें और आधे घंटे के लिए छाया में सुखाएं और फिर बोएं। नर्सरी में डैम्पिंग आफ रोकने के लिए 10 लि. पानी में, 20 ग्राम रिडोमिल गोल्ड 10 दिनों के अंतराल में दो बार दिया जाना चाहिए।

बिचड़ा के लिए खेत की तैयारी एवं समय: बिचड़ा उगने के लिए नर्सरी की क्यारियाँ ऊँची व जल निकास की सुविधायुक्त होनी चाहिए। इस तरह की क्यारियों की मिट्टी अच्छी जुताई कर भुरभुरी बना लेनी चाहिए। बरसाती मिर्च की खेती हेतु बीज नर्सरी में मई-जून के महीने में बोनी चाहिए। बिचड़ों की रोपाई मध्य जून से मध्य जुलाई तक कर देनी चाहिए। जाड़े की फसल हेतु बीच बोने का समय नवम्बर महिना है। बिचड़ों की रोपाई फरवरी के दूसरे पखवाड़े में करते हैं।

बीज की मात्रा: हाइब्रिड किस्मों के लिए बीज की मात्रा 80-100 ग्राम प्रति एकड़ होनी चाहिए।

रोपाई की तकनीक एवं समय - मिर्च की रोपाई वर्षा, शरद, ग्रीष्म तीनों मौसम मे की जा सकती है। परन्तु मिर्च की मुख्य फसल खरीफ (जून-अक्टू.) मे तैयार की जाती है। जिसकी रोपाई जून.-जुलाई मे, शरद ऋतु की फसल की रोपाई सितम्बर-अक्टूबर तथा ग्रीष्म कालीन फसल की रोपाई फर-मार्च में की जाती है।

रोपाई: पौधे 25 से 35 दिन बाद रोपने योग्य हो जाते हैं। 75 x 60 से.मी, 60 से.मी. x 60 से.मी. एवं 60 X 45 से. मी. की दूरी पर क्रमशः शीतकालीन एवं ग्रीष्मकालीन मौसम में रोपना चाहिए।

रासायनिक उर्वरकों के आवेदन की खुराक और अवधि

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	रोपाई के 10-12 दिन बाद	50	50	50
2	30 दिन बाद	25	25	25
3	60 दिन बाद	25	00	00

साथ ही 50 किग्रा मैग्नीशियम सल्फेट + 25 किग्रा झिंक सल्फेट + 5 किग्रा बोरान प्रति हेक्टेयर का उपयोग करें.

रोग और कीट नियंत्रण

खाद के साथ फरटेरा (ट्रूपोंड) 4 किलो प्रति एकड़ अथवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकड़ इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है.

क्र.	रोग/ कीट	दवा का नाम	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	अंत्रिकनोस	डायथेन एम 45	2.5 ग्राम प्रति ली
2	उखेड़ा रोग	कार्बेन्डाज़िम	01 ग्राम प्रति ली
3	पत्तों पर सफेद धब्बे	सल्फर	02 ग्राम प्रति ली
4	माहू/ थ्रिप्स	इमिडाक्लोरपीड	04 मि. ली प्रति 10 ली.
		एक्टरा	06 ग्राम प्रति 15 ली.
5	सफ़ेद मक्खी	लॅनो	02 मि. ली प्रति ली
		पेगासस	01 ग्राम प्रति ली
6	माईट	सल्फर	02 ग्राम प्रति ली
		मैजिस्टर	02 मि. ली प्रति ली.
7	फल छेदक	प्रोफेनोफॉस	01 मि. ली प्रति ली

सिंचाई: नियमित व सावधानीपूर्वक किया गया सिंचाई अच्छी उपज हेतु जरूरी है। रोपाई के बाद शुरूआती दिनों में नमी की कमी उपज में काफी कमी लाती है। दो सिंचाइयों के बीच का अंतराल मौसम व मृदा के प्रकार पर निर्भर करता है।

निकाई-गुड़ाई

निकाई-गुड़ाई के द्वारा खेत तो खरपतवारविहीन होते ही हैं, साथ ही इनके द्वारा प्रयोग होने वाले पोषक तत्व मिर्च के पौधों द्वारा उपयोग में लाये जाते हैं एवं इनके द्वारा होने वाले रोग व कीट से भी मिर्च का बचाव होता है। दो बार हाथ से निकाई व तीन बार गुड़ाई आवश्यक है। मिट्टी भी दो बार चढ़ाना उचित होता है।

फलों की तुड़ाई

मिर्चों की तुड़ाई हरा रंग आने पर करें या फिर पकने के लिए पौधे पर ही रहने दें। मिर्चों का पकने के बाद वाला रंग किस्म पर निर्भर करता है। अधिक तुड़ाइयां लेने के लिए यूरिया 10 ग्राम प्रति लीटर और घुलनशील K @ 10 ग्राम प्रति लीटर पानी (1 प्रतिशत प्रत्येक का घोल) की स्प्रे 15 दिनों के फासले पर कटाई के समय करें। पैकिंग के लिए मिर्चें पक्की और लाल रंग की होने पर तोड़ें। सुखाने के लिए प्रयोग की जाने वाली मिर्चों की पूरी तरह पकने के बाद ही तुड़ाई करें। मिर्चों को पहले सुखाया जाता है फिर आकार के आधार पर छांटने के बाद पैक किया जाता है और स्टोर कर लिया जाता है।

टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.



Chilli

Varieties:- Kranti, Long Monty, Revati, Shakti, Durvasa, Suvarna, Vaishali-9, Selection-101, Selection-202, Pusa Jwala, G-4, Revati Super, Kranti Super, PC-1, SeedcoJwala, Selection-09, Selection-41.

Climate: Chilli is a hot season vegetable. It can be successfully cultivated in areas where annual rainfall is 60-150 cm. Excessive rainfall harms it. Temperatures above and below normal both reduce its yield. Hot and dry winds at the time of flowering reduce the yield by causing the flowers and fruits to fall.

Field Preparation: Prepare the field well by doing 4-5 deep plowings. At the same time, use well-rotted cow dung manure at the rate of 10 tons per acre. If the manure is not well-rotted, there will be a risk of termite attack.

Soil: Sandy-loam soil rich in nutrients is ideal for it. Lack of oxygen in the soil reduces its yield. Therefore, there should be a good drainage system in its fields.

Seed treatment: - Moisten the seed with Ridomil Gold 02 gram / kg and dry it in the shade for half an hour and then sow. To prevent damping off in the nursery, 20 grams of Ridomil Gold should be given twice at an interval of 10 days in 10 liters of water.

Field preparation and time for seedlings

For growing seedlings, the nursery beds should be high and have drainage facilities. The soil of such beds should be plowed well and made friable. For the cultivation of rainy season chilli, the seeds should be sown in the nursery in the month of May-June. Seedlings should be planted from mid-June to mid-July. For winter crop, the time for sowing seeds is November. Seedlings are planted in the second fortnight of February.

Seed quantity: For hybrid varieties, the seed quantity should be 80-100 grams per acre.

Technique and time of planting - Chilli can be planted in all three seasons, rainy, autumn and summer. But the main crop of chilli is prepared in Kharif (June-October). Whose planting is done in June-July, autumn crop is planted in September-October and summer crop is planted in February-March.

Transplantation: The plants become ready for planting after 25 to 35 days. Planting should be done at a distance of 75 x 60 cm, 60 cm x 60 cm and 60 x 45 cm in winter and summer seasons respectively.

Dose and duration of application of chemical fertilizers

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10–12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

Also use 50 kg magnesium sulphate + 25 kg zinc sulphate + 5 kg boron per hectare.

Disease and Pest Control

Along with fertilizer, use Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre. This ratio gives protection from sucking pests for 21 days.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthracnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidaclorpid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

Irrigation: Regular and careful irrigation is necessary for good yield. Lack of moisture in the initial days after transplantation causes considerable reduction in yield. The interval between two irrigations depends on the weather and type of soil.

Weeding: Weeding not only makes the field weed-free, but the nutrients used by them are also used by the chilli plants and the chilli is protected from diseases and pests caused by them. Two hand weeding and three times hoeing is necessary. It is also advisable to apply soil twice.

Plucking of fruits

Plucking the chillies should be done when they turn green or else they should be left on the plant to ripen. The colour of the chillies after ripening depends on the variety. To get more harvesting, spray urea @ 10 grams per litre and soluble K @ 10 grams per litre of water (1% solution of each) at the time of harvesting at an interval of 15 days. For packing, pluck the chillies when they are ripe and red in colour. The chillies used for drying should be plucked only after they are fully ripe. The chillies are first dried, then after sorting them on the basis of size, they are packed and stored.

Note:- All the above information is based on the experiments conducted at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

મરયાં

જાતો:- કાંતિ, લોગ મોન્ટેરી, રેવતી, શક્તિ, દુર્વાસા, સુવર્ણા, વૈશાલી, સિલેક્શન-૧૦૧, સિલેક્શન-૨૦૨, પુસા જ્વાલા, જિલ્લો-૪.

આબોહવા: મરયાં ગરમ ઋતુની શાકભાજી છે. તે એવા વિસ્તારોમાં સફળતાપૂર્વક ઉગાડી શકાય છે જ્યાં વાર્ષિક વરસાદ ૬૦-૧૫૦ સે.મી. હોય છે. વધુ પડતો વરસાદ તેને નુકસાન પહોંચાડે છે. સામાન્ય કરતાં વધુ અને ઓછું તાપમાન બંને તેની ઉપજ ઘટાડે છે. ફૂલો આવતા સમયે ગરમ અને સૂકા પવન ફૂલો અને ફળો ખેડીને ઉપજ ઘટાડે છે.

ખેતરની તૈયારી: ૪-૫ ઊંડા ખેડાણ કરીને ખેતરને સારી રીતે તૈયાર કરો. તે જ સમયે, પ્રતિ એકર ૧૦ ટન સારી રીતે સડેલા ગાયના છાણ ખાતરનો ઉપયોગ કરો. જો ખાતર સારી રીતે સડેલું ન હોય, તો ઉઘર્ણના હુમલાનું જોખમ રહેશે.

માટી: પોષક તત્વોથી ભરપૂર રેતાળ-લોમ જમીન તેના માટે આદર્શ છે. જમીનમાં ઓક્સિજનનો અભાવ તેની ઉપજ ઘટાડે છે. તેથી, તેના ખેતરોમાં સારી ડ્રેનેજ સિસ્ટમ હોવી જોઈએ.

બીજ માવજત: - બીજને રિડોમિલ ગોલ્ડ 02 ગ્રામ / કિલોથી ભીના કરો અને તેને છાયામાં અડધા કલાક માટે સૂકવો અને પછી વાવો. નર્સરીમાં ભીનાશ અટકાવવા માટે, 20 ગ્રામ રિડોમિલ ગોલ્ડ 10 લિટર પાણીમાં 10 દિવસના અંતરાલથી બે વાર આપવું જોઈએ.

ખેતરની તૈયારી અને રોપાઓ માટેનો સમય
રોપા ઉગાડવા માટે, નર્સરીના પલંગ ઊંચા હોવા જોઈએ અને ડ્રેનેજની સુવિધા હોવી જોઈએ. આવા પલંગની માટી સારી રીતે ખેડવી જોઈએ અને ઢીલી બનાવવી જોઈએ. વરસાદી મરયાંની ખેતી માટે, બીજ મે-જૂન મહિનામાં નર્સરીમાં વાવવા જોઈએ. રોપાઓ મધ્ય જૂનથી મધ્ય જુલાઈ સુધી વાવવા જોઈએ. શિયાળાના પાક માટે, બીજ વાવવાનો સમય નવેમ્બર છે. રોપાઓ ફેબ્રુઆરીના બીજા પખવાડિયામાં વાવવામાં આવે છે.

બીજનું પ્રમાણ: હાઇબ્રિડ જાતો માટે, બીજનું પ્રમાણ પ્રતિ એકર 80-100 ગ્રામ હોવું જોઈએ.

વાવેતરની તકનીક અને સમય - મરયાંનું વાવેતર વરસાદી, પાનખર અને ઉનાળો ત્રણેય ઋતુઓમાં કરી શકાય છે. પરંતુ મરયાંનો મુખ્ય પાક ખરીફ (જૂન-ઓક્ટોબર) માં તૈયાર કરવામાં આવે છે. જેનું વાવેતર જૂન-જુલાઈમાં કરવામાં આવે છે, પાનખર પાક સપ્ટેમ્બર-ઓક્ટોબરમાં અને ઉનાળુ પાક ફેબ્રુઆરી-માર્ચમાં વાવેતર કરવામાં આવે છે.

ફેરફાર: છોડ 25 થી 35 દિવસ પછી વાવેતર માટે તૈયાર થાય છે. વાવેતર શિયાળા અને ઉનાળાની ઋતુમાં અનુક્રમે 75 x 60 સેમી, 60 સેમી x 60 સેમી અને 60 x 45 સેમીના અંતરે કરવું જોઈએ.

રાસાયણિક ખાતરોના ઉપયોગની માત્રા અને સમયગાળો

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10–12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

૫૦ કિલો મેગ્નેશિયમ સલ્ફેટ + ૨૫ કિલો ઝીંક સલ્ફેટ + ૫ કિલો બોરોન પ્રતિ હેક્ટર વાપરો.

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ રાસાયણિક દવાની માત્રા અને અવધિ
ખાતર સાથે, ફર્ટિરા (ડુપોન્ડ) ૪ કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટીકો (સિંજેન્ટા) ૨.૫ કિલો પ્રતિ એકર વાપરો. આ ગુણોત્તર ૨૧ દિવસ સુધી ચૂસીયા જીવાતોથી રક્ષણ આપે છે.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraco nose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

સિંચાઈ: સારી ઉપજ માટે નિયમિત અને કાળજીપૂર્વક સિંચાઈ જરૂરી છે. રોપણી પછી શરૂઆતના દિવસોમાં ભેજનો અભાવ ઉપજમાં નોંધપાત્ર ઘટાડો કરે છે. બે સિંચાઈ વચ્ચેનો અંતરાલ હવામાન અને જમીનના પ્રકાર પર આધાર રાખે છે.

નીંદણ: નીંદણ કાઢવાથી ખેતર ફક્ત નીંદણમુક્ત જ નથી થતું, પરંતુ તેના દ્વારા વપરાતા પોષક તત્વોનો પણ મરયાના છોડ દ્વારા ઉપયોગ થાય છે અને મરયાને તેના કારણે થતા રોગો અને જીવાતોથી રક્ષણ મળે છે. બે વાર હાથથી નીંદણ કાઢવા અને ત્રણ વાર કોતરણી કરવી જરૂરી છે. બે વાર માટી નાખવાની પણ સલાહ આપવામાં આવે છે.

ફળો તોડવા: મરયા લીલા થાય ત્યારે તેને તોડવા જોઈએ, નહીંતર તેને પાકવા માટે છોડ પર છોડી દેવા જોઈએ. પાક્યા પછી મરયાનો રંગ વિવિધતા પર આધાર રાખે છે. વધુ લણણી મેળવવા માટે, લણણી સમયે 15 દિવસના અંતરે યુરિયા @ 10 ગ્રામ પ્રતિ લિટર અને દ્રાવ્ય K @ 10 ગ્રામ પ્રતિ લિટર પાણી (દરેકનું 1% દ્રાવણ) છંટકાવ કરો. પેકિંગ માટે, મરયા પાકેલા અને લાલ રંગના થાય ત્યારે તેને તોડી નાખો. સૂકવવા માટે વપરાતા મરયા સંપૂર્ણપણે પાક્યા પછી જ તોડી નાખવા જોઈએ. મરયા પહેલા સૂકવવામાં આવે છે, પછી કદના આધારે તેને છંટકાવ કર્યા પછી, તેને પેક અને સંગ્રહિત કરવામાં આવે છે.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી અલગ અલગ સ્થળોએ અલગ અલગ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઈ શકે છે.

మిరప

రకాలు:- క్రాంతి, లాంగ్ మాంటెరీ, రేవతి, శక్తి, దుర్వాస, సువర్ణ, వైశాలి, సెలక్షన్-101, సెలక్షన్-202, పూసా జ్వాలా, జిల్లా-4.

వాతావరణం: మిరప ఒక వేడి సీజన్ కూరగాయ. వార్షిక వర్షపాతం 60-150 సెం.మీ ఉన్న ప్రాంతాలలో దీనిని విజయవంతంగా సాగు చేయవచ్చు. అధిక వర్షపాతం దీనికి హాని కలిగిస్తుంది. సాధారణం కంటే ఎక్కువ మరియు తక్కువ ఉష్ణోగ్రతలు రెండూ దాని దిగుబడిని తగ్గిస్తాయి. పుష్పించే సమయంలో వేడి మరియు పొడి గాలులు పువ్వులు మరియు పండ్లు పడిపోవడం ద్వారా దిగుబడిని తగ్గిస్తాయి.

పొలం తయారీ: 4-5 లోతుగా దున్నడం ద్వారా పొలాన్ని బాగా సిద్ధం చేయండి. అదే సమయంలో, ఎకరానికి 10 టన్నుల చొప్పున బాగా కుళ్ళిన ఆవు పేడ ఎరువును ఉపయోగించండి. ఎరువు బాగా కుళ్ళిపోకపోతే, చెదపురుగుల దాడి ప్రమాదం ఉంటుంది.

నేల: పోషకాలు అధికంగా ఉండే ఇసుక-లోమట్టి నేల దీనికి అనువైనది. నేలలో ఆక్సిజన్ లేకపోవడం వల్ల దాని దిగుబడి తగ్గుతుంది. అందువల్ల, దాని పొలాలలో మంచి పారుదల వ్యవస్థ ఉండాలి.
విత్తన శుద్ధి: - విత్తనాన్ని కిలోకు 02 గ్రాముల రిడ్మిల్ గోల్డ్ తడిపి, అరగంట పాటు నీడలో ఆరబెట్టి, ఆపై విత్తండి. నర్సరీలో తేమ తగ్గకుండా ఉండటానికి, 20 గ్రాముల రిడ్మిల్ గోల్డ్ ను 10 రోజుల విరామంలో 10 లీటర్ల నీటిలో రెండుసార్లు ఇవ్వాలి.

పొలం తయారీ మరియు మొలకల సమయం
మొలకల పెంపకం కోసం, నర్సరీ పడకలు ఎక్కువగా ఉండాలి మరియు పారుదల సౌకర్యాలు ఉండాలి. అటువంటి పడకల నేలను బాగా దున్నాలి మరియు మురుగునీటితో తయారు చేయాలి. వర్షాకాలం మిరప సాగు కోసం, మే-జూన్ నెలలో నర్సరీలో విత్తనాలను విత్తాలి. జూన్ మధ్య నుండి జూలై మధ్య వరకు మొలకల నాటాలి. శీతాకాలపు పంటకు, విత్తనాలు విత్తడానికి సమయం నవంబర్. ఫిబ్రవరి రెండవ పక్షం రోజుల్లో మొలకల నాటుతారు.
విత్తన పరిమాణం: హైబ్రిడ్ రకాలకు, ఎకరానికి 80-100 గ్రాముల విత్తన పరిమాణం ఉండాలి.

నాటడం యొక్క సాంకేతికత మరియు సమయం - మిరపను వర్షాకాలం, శరదృతువు మరియు వేసవిలో మూడు సీజన్లలో నాటవచ్చు. కానీ మిరప ప్రధాన పంట ఖరీఫ్ (జూన్-అక్టోబర్)లో తయారు చేయబడుతుంది. జూన్-జూలైలో నాటడం జరుగుతుంది, శరదృతువు పంటను సెప్టెంబర్-అక్టోబర్లో మరియు వేసవి పంటను ఫిబ్రవరి-మార్చిలో నాటడం జరుగుతుంది.

నాటడం: 25 నుండి 35 రోజుల తర్వాత మొక్కలు నాటడానికి సిద్ధంగా ఉంటాయి. శీతాకాలం మరియు వేసవి కాలంలో వరుసగా 75 x 60 సెం.మీ, 60 సెం.మీ x 60 సెం.మీ మరియు 60 x 45 సెం.మీ దూరంలో నాటడం చేయాలి.

రసాయన ఎరువుల మోతాదు మరియు దరఖాస్తు వ్యవధి

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10–12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

హెక్టారుకు 50 కిలోల మెగ్నీషియం సల్ఫేట్ + 25 కిలోల జింక్ సల్ఫేట్ + 5 కిలోల బోరాన్ కూడా వాడండి.

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయన ఔషధం యొక్క మోతాదు మరియు వ్యవధి
ఎరువుతో పాటు, ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డూపాండ్) లేదా ఎకరానికి 2.5 కిలోల వెర్మికో (సింజెంటా) ఉపయోగించండి. ఈ నిష్పత్తి 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే తెగుళ్ల నుండి రక్షణ కల్పిస్తుంది.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraco	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

నీటిపారుదల: మంచి దిగుబడికి క్రమం తప్పకుండా మరియు జాగ్రత్తగా నీటిపారుదల అవసరం. నాట్లు వేసిన తర్వాత ప్రారంభ రోజుల్లో తేమ లేకపోవడం వల్ల దిగుబడి గణనీయంగా తగ్గుతుంది. రెండు నీటిపారుదలల మధ్య విరామం వాతావరణం మరియు నేల రకం మీద ఆధారపడి ఉంటుంది.

కలుపు తీయుట: కలుపు తీయుట వలన పొలంలో కలుపు రహితంగా ఉండటమే కాకుండా, అవి ఉపయోగించే పోషకాలను మిరప మొక్కలు కూడా ఉపయోగించుకుంటాయి మరియు మిరపకాయ వాటి వల్ల కలిగే వ్యాధులు మరియు తెగుళ్ల నుండి రక్షించబడుతుంది. రెండుసార్లు చేతితో కలుపు తీయడం మరియు మూడు సార్లు గడ్డి తీయడం అవసరం. రెండుసార్లు మట్టిని చల్లడం కూడా మంచిది.

పండ్లు కోయడం: మిరపకాయలు ఆకుపచ్చగా మారినప్పుడు కోయాలి లేదా పండించడానికి మొక్కపైనే వదిలివేయాలి. పండిన తర్వాత మిరపకాయల రంగు రకాన్ని బట్టి ఉంటుంది. ఎక్కువ పంట పొందడానికి, కోత సమయంలో లీటరుకు 10 గ్రాముల యూరియా మరియు లీటరు నీటికి 10 గ్రాముల కరిగే K (ఒక్కొక్కటి 1% ద్రావణం) 15 రోజుల వ్యవధిలో పిచికారీ చేయాలి. ప్యాకింగ్ కోసం, మిరపకాయలు పండినప్పుడు మరియు ఎరువు రంగులోకి వచ్చినప్పుడు తీయండి. ఎండబెట్టడానికి ఉపయోగించే మిరపకాయలను పూర్తిగా పండిన తర్వాత మాత్రమే తీయాలి. మిరపకాయలను ముందుగా ఎండబెట్టి, పరిమాణం ఆధారంగా క్రమబద్ధీకరించిన తర్వాత, వాటిని ప్యాక్ చేసి నిల్వ చేస్తారు.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాలపై ఆధారపడి ఉంటుంది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు సీజన్ కారణంగా మారవచ్చు.

ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿ

ವೈವಿಧ್ಯಗಳು:- ಕ್ರಾಂತಿ, ಲಾಂಗ್ ಮಾಂಟೆರಿ, ರೇವತಿ, ಶಕ್ತಿ, ದೂರ್ವಾಸ, ಸುವರ್ಣ, ವೈಶಾಲಿ, ಸೆಲೆಕ್ಷನ್-101, ಸೆಲೆಕ್ಷನ್-202, ಪುಸಾ ಜ್ವಾಲಾ, ಜಿಲ್ಲೆ - 4.

ಹವಾಮಾನ: ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿ ಒಂದು ಬಿಸಿ ಋತುವಿನ ತರಕಾರಿ. ವಾರ್ಷಿಕ ಮಳೆ 60-150 ಸೆಂ.ಮೀ ಇರುವ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಇದನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಬೆಳೆಸಬಹುದು. ಅತಿಯಾದ ಮಳೆ ಇದಕ್ಕೆ ಹಾನಿ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕಿಂತ ಹೆಚ್ಚಿನ ಮತ್ತು ಕಡಿಮೆ ತಾಪಮಾನವು ಅದರ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಹೊಬಿಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬಿಸಿ ಮತ್ತು ಶುಷ್ಕ ಗಾಳಿಯು ಹೂವುಗಳು ಮತ್ತು ಹಣ್ಣುಗಳು ಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಮೂಲಕ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುತ್ತದೆ.

ಕ್ಷೇತ್ರ ತಯಾರಿ: 4-5 ಆಳವಾದ ಉಳುಮೆ ಮಾಡುವ ಮೂಲಕ ಹೊಲವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಯಾರಿಸಿ. ಅದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಎಕರೆಗೆ 10 ಟನ್ ದರದಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಬಳಸಿ. ಗೊಬ್ಬರವು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಳೆತವಾಗಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ, ಗೆದ್ದಲು ದಾಳಿಯ ಅಪಾಯವಿರುತ್ತದೆ.

ಮಣ್ಣು: ಪೋಷಕಾಂಶಗಳಿಂದ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿರುವ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಮಣ್ಣು ಇದಕ್ಕೆ ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಆಮ್ಲಜನಕದ ಕೊರತೆಯು ಅದರ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಅದರ ಹೊಲಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮ ಒಳಚರಂಡಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಇರಬೇಕು.

ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ: - ಬೀಜವನ್ನು ರಿಡೋಮಿಲ್ ಗೋಲ್ಡ್ 02 ಗ್ರಾಂ / ಕೆಜಿಯಿಂದ ತೇವಗೊಳಿಸಿ ಅರ್ಧ ಗಂಟೆ ನೆರಳಿನಲ್ಲಿ ಒಣಗಿಸಿ ನಂತರ ಬಿತ್ತಿ. ನರ್ಸರಿಯಲ್ಲಿ ತೇವಾಂಶವನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು, 20 ಗ್ರಾಂ ರಿಡೋಮಿಲ್ ಗೋಲ್ಡ್ ಅನ್ನು 10 ಲೀಟರ್ ನೀರಿನಲ್ಲಿ 10 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಬಾರಿ ನೀಡಬೇಕು.

ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧತೆ ಮತ್ತು ಸಸಿಗಳಿಗೆ ಸಮಯ ಬೆಳೆಯುವ ಸಸಿಗಳಿಗೆ, ನರ್ಸರಿ ಹಾಸಿಗೆಗಳು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರಬೇಕು ಮತ್ತು ಒಳಚರಂಡಿ ಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರಬೇಕು. ಅಂತಹ ಹಾಸಿಗೆಗಳ ಮಣ್ಣನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ ಸಡಿಲಗೊಳಿಸಬೇಕು. ಮಳೆಗಾಲದ ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿ ಕೃಷಿಗಾಗಿ, ಮೇ-ಜೂನ್ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ನರ್ಸರಿಯಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಬೇಕು. ಜೂನ್ ಮಧ್ಯದಿಂದ ಜುಲೈ ಮಧ್ಯದವರೆಗೆ ಮೂಳಕೆಗಳನ್ನು ನೆಡಬೇಕು. ಚಳಿಗಾಲದ ಬೆಳೆಗೆ, ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಸಮಯ ನವೆಂಬರ್. ಫೆಬ್ರವರಿ ಎರಡನೇ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮೂಳಕೆಗಳನ್ನು ನೆಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ: ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಪ್ರಭೇದಗಳಿಗೆ, ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ ಎಕರೆಗೆ 80-100 ಗ್ರಾಂ ಆಗಿರಬೇಕು.

ನಾಟಿ ಮಾಡುವ ತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಸಮಯ - ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಯನ್ನು ಮಳೆಗಾಲ, ಶರತ್ಕಾಲ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯ ಮೂರು ಋತುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ನೆಡಬಹುದು. ಆದರೆ ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಯ ಮುಖ್ಯ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಖಾರಿಫ್‌ನಲ್ಲಿ (ಜೂನ್-ಅಕ್ಟೋಬರ್) ತಯಾರಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಜೂನ್-ಜುಲೈನಲ್ಲಿ ನೆಡಲಾಗುತ್ತದೆ, ಶರತ್ಕಾಲದ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಸೆಪ್ಟೆಂಬರ್-ಅಕ್ಟೋಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ನೆಡಲಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಫೆಬ್ರವರಿ-ಮಾರ್ಚ್‌ನಲ್ಲಿ ನೆಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ನಾಟಿ: 25 ರಿಂದ 35 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಸಸ್ಯಗಳು ನಾಟಿ ಮಾಡಲು ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತವೆ. ಚಳಿಗಾಲ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ 75 x 60 ಸೆಂ.ಮೀ, 60 ಸೆಂ.ಮೀ x 60 ಸೆಂ.ಮೀ ಮತ್ತು 60 x 45 ಸೆಂ.ಮೀ ದೂರದಲ್ಲಿ ನೆಡಬೇಕು.

ರಾಸಾಯನಿಕ ಗೊಬ್ಬರಗಳ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಅನ್ವಯದ ಅವಧಿ

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

ಅಲ್ಲದೆ ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 50 ಕೆಜಿ ಮೆಗ್ನೀಸಿಯಮ್ ಸಲ್ಫೇಟ್ + 25 ಕೆಜಿ ಸತು ಸಲ್ಫೇಟ್ + 5 ಕೆಜಿ ಬೋರಾನ್ ಬಳಸಿ.

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧದ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಅವಧಿ
ಗೊಬ್ಬರದ ಜೊತೆಗೆ, ಎಕರೆಗೆ ಫರ್ಟಿಫರ್ (ಡುಪಾಂಡ್) 4 ಕೆಜಿ ಅಥವಾ ಎಕರೆಗೆ ವರ್ಟಿಕೋ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) 2.5 ಕೆಜಿ ಬಳಸಿ. ಈ ಅನುಪಾತವು 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ನೀಡುತ್ತದೆ.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraco	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

ನೀರಾವರಿ: ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಗೆ ನಿಯಮಿತ ಮತ್ತು ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯ. ಕಸಿ ಮಾಡಿದ ನಂತರದ ಆರಂಭಿಕ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ತೇವಾಂಶದ ಕೊರತೆಯು ಇಳುವರಿಯಲ್ಲಿ ಗಣನೀಯ ಇಳಿಕೆಗೆ ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆ. ಎರಡು ನೀರಾವರಿಗಳ ನಡುವಿನ ಮಧ್ಯಂತರವು ಹವಾಮಾನ ಮತ್ತು ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುತ್ತದೆ.

ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವಿಕೆ: ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವುದರಿಂದ ಹೊಲವು ಕಳೆ ಮುಕ್ತವಾಗುವುದಲ್ಲದೆ, ಅವು ಬಳಸುವ ಪೋಷಕಾಂಶಗಳನ್ನು ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿ ಸಸ್ಯಗಳು ಸಹ ಬಳಸುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಯನ್ನು ಅವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ರೋಗಗಳು ಮತ್ತು ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಎರಡು ಬಾರಿ ಕೈ ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವುದು ಮತ್ತು ಮೂರು ಬಾರಿ ಗುದ್ದಲಿ ಮಾಡುವುದು ಅವಶ್ಯಕ. ಎರಡು ಬಾರಿ ಮಣ್ಣನ್ನು ಹಾಕುವುದು ಸಹ ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ.

ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಕೀಳುವುದು; ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಗಳು ಹಸಿರು ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದಾಗ ಕೀಳಬೇಕು ಅಥವಾ ಅವುಗಳನ್ನು ಹಣ್ಣುಗಳು ಸಸ್ಯದ ಮೇಲೆ ಬಿಡಬೇಕು. ಮಾಗಿದ ನಂತರ ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಗಳ ಬಣ್ಣವು ವೈವಿಧ್ಯತೆಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುತ್ತದೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಕೊಯ್ಲು ಪಡೆಯಲು, ಕೊಯ್ಲು ಸಮಯದಲ್ಲಿ 15 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ ಯೂರಿಯಾ @ 10 ಗ್ರಾಂ ಮತ್ತು ಕರಗುವ K @ 10 ಗ್ರಾಂ (ಪ್ರತಿಯೊಂದರ 1% ದ್ರಾವಣ) ಸಿಂಪಡಿಸಿ. ಪ್ಯಾಕಿಂಗ್‌ಗಾಗಿ, ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಗಳು ಹಣ್ಣಾದಾಗ ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ಕೀಳಬೇಕು. ಒಣಗಲು ಬಳಸುವ ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಗಳನ್ನು ಅವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹಣ್ಣಾದ ನಂತರವೇ ಕೀಳಬೇಕು. ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿಗಳನ್ನು ಮೊದಲು ಒಣಗಿಸಿ, ನಂತರ ಗಾತ್ರದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ವಿಂಗಡಿಸಿದ ನಂತರ, ಅವುಗಳನ್ನು ಪ್ಯಾಕ್ ಮಾಡಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿವಿಧ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುಮಾನಗಳ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.



মাৰ্কফিল্ড হাইব্ৰিড ছিডছ প্ৰাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড।
বি-৩, অতিৰিক্ত ঔদ্যোগিক কলনী, জালনা, গ্ৰাহক সেৱা মোবাইল নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

মৰিচা

জাত:- ক্ৰান্তি, লং মণ্টেৰী, ৰেৱতী, শক্তি, দুৰ্বাস, সুবৰ্ণ, বৈশালী, বাছনি-১০১, বাছনি-২০২, পুছা জৱালা, জিলা-৪।

জলবায়ু: মৰিচা গৰমৰ বতৰৰ শাক। বছৰি ৬০-১৫০ চে.মি. বৰষুণ হোৱা অঞ্চলত ইয়াৰ খেতি সফলতাৰে কৰিব পাৰি। অত্যধিক বৰষুণে ইয়াৰ ক্ষতি কৰে। স্বাভাৱিকৰ ওপৰত আৰু তলত উষ্ণতা দুয়োটা ইয়াৰ উৎপাদন হ্ৰাস কৰে। ফুল ফুলাৰ সময়ত গৰম আৰু শুকান বতাহে ফুল আৰু ফল সৰি পৰা উৎপাদন হ্ৰাস কৰে।

ক্ষেত্ৰ প্ৰস্তুতি: ৪-৫টা দকৈ হাল বোৱাই পথাৰখন ভালদৰে প্ৰস্তুত কৰিব লাগে। একে সময়তে ভালকৈ পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰৰ গোবৰ প্ৰতি একৰত ১০ টন হাৰত ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে। যদি গোবৰ ভালদৰে পচি নাযায় তেন্তে টেমাইটৰ আক্ৰমণৰ আশংকা থাকিব।

মাটি: পুষ্টিৰ উপাদানৰে সমৃদ্ধ বালিচহীয়া মাটি ইয়াৰ বাবে আদৰ্শ। মাটিত অক্সিজেনৰ অভাৱত ইয়াৰ উৎপাদন কমি যায়। গতিকে ইয়াৰ পথাৰত ভাল পানী নিষ্কাশন ব্যৱস্থা থাকিব লাগে।

বীজ শোধন: - বীজটো ৰিডোমিল গোল্ড ০২ গ্ৰাম/কিলোগ্ৰাম দি তিয়াই ছাঁত আধা ঘণ্টা শুকুৱাই তাৰ পিছত সিঁচিব লাগে। নাৰ্চাৰীত ডেম্পিং অফ ৰোধ কৰিবলৈ ২০ গ্ৰাম ৰিডোমিল গোল্ড ১০ দিনৰ ব্যৱধানত দুবাৰকৈ ১০ লিটাৰ পানীত দিব লাগে।

পথাৰ প্ৰস্তুতি আৰু পুলিৰ বাবে সময়: পুলি খেতিৰ বাবে নাৰ্চাৰীৰ বিচনা ওখ হ'ব লাগে আৰু পানী নিষ্কাশনৰ সুবিধা থাকিব লাগে। এনে বিচনাৰ মাটি ভালদৰে হাল বাই ভঙা হ'ব লাগে। বাৰিষা মৰিচাৰ খেতিৰ বাবে মে'-জুন মাহত নাৰ্চাৰীত বীজ সিঁচিব লাগে। জুন মাহৰ মাজভাগৰ পৰা জুলাই মাহৰ মাজভাগলৈ পুলি ৰোপণ কৰিব লাগে। শীতকালীন শস্যৰ বাবে বীজ সিঁচাৰ সময় নৱেম্বৰ। ফেব্ৰুৱাৰী মাহৰ দ্বিতীয় পষেকত পুলি ৰোপণ কৰা হয়।

বীজৰ পৰিমাণ; সংকৰ জাতৰ বাবে বীজৰ পৰিমাণ প্ৰতি একৰত ৮০-১০০ গ্ৰাম হ'ব লাগে।

ৰোপণৰ কৌশল আৰু সময় - বৰষুণ, শৰৎ আৰু গ্ৰীষ্ম তিনিওটা ঋতুতে মৰিচা ৰোপণ কৰিব পাৰি। কিন্তু খৰিফত (জুন-অক্টোবৰ) মৰিচাৰ মূল শস্য প্ৰস্তুত কৰা হয়। যাৰ ৰোপণ জুন-জুলাই মাহত কৰা হয়, শৰৎকালীন শস্য ছেপ্টেম্বৰ-অক্টোবৰ মাহত আৰু গ্ৰীষ্মকালীন শস্য ফেব্ৰুৱাৰী-মাৰ্চ মাহত ৰোপণ কৰা হয়।

প্ৰতিস্থাপন: ২৫ৰ পৰা ৩৫ দিনৰ পিছত গছবোৰ ৰোপণৰ বাবে সাজু হৈ উঠে। শীত আৰু গ্ৰীষ্মকালত ক্ৰমে ৭৫ x ৬০ চে.মি., ৬০ চে.মি. x ৬০ চে.মি. আৰু ৬০ x ৪৫ চে.মি. দূৰত্বত ৰোপণ কৰিব লাগে।

ৰাসায়নিক সাৰ প্ৰয়োগৰ মাত্ৰা আৰু সময়সীমা

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

লগতে প্ৰতি হেক্টৰত ৫০ কেজি মেগনেছিয়াম ছালফেট + ২৫ কেজি জিংক ছালফেট + ৫ কেজি ব'ৰন ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে।

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্ৰা আৰু সময়সীমা

সাৰৰ লগতে প্ৰতি একৰত ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) ৪ কিলোগ্ৰাম বা ভাটিকো (Syngenta) ২.৫ কিলোগ্ৰাম প্ৰতি একৰত ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে। এই অনুপাতে ২১ দিনলৈকে কীট-পতংগ চুহি লোৱাৰ পৰা সুৰক্ষা প্ৰদান কৰে।

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthracoise	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

জলসিঞ্চন: ভাল উৎপাদনৰ বাবে নিয়মিত আৰু সাৱধানে জলসিঞ্চন কৰাটো প্ৰয়োজনীয়। ৰোপণৰ পিছত প্ৰথম দিনবোৰত আৰ্দ্ৰতাৰ অভাৱৰ ফলত উৎপাদন যথেষ্ট হ্ৰাস পায়। দুটা জলসিঞ্চনৰ মাজৰ ব্যৱধান বতৰ আৰু মাটিৰ প্ৰকাৰৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে।

অপতৃণ কৰা: অপতৃণ কৰিলে পথাৰখন কেৱল অপতৃণমুক্ত হোৱাই নহয়, ইহঁতে ব্যৱহাৰ কৰা পুষ্টিৰ উপাদানসমূহো মৰিচা গছবোৰে ব্যৱহাৰ কৰে আৰু ইয়াৰ ফলত হোৱা ৰোগ আৰু কীট-পতংগৰ পৰা মৰিচা ৰক্ষা পৰে। দুবাৰ হাতেৰে ঘাঁহ কাটিব লাগে আৰু তিনিবাৰকৈ কোদাল কাটিব লাগে। মাটি দুবাৰ লগাও ভাল।

ফল ছিঙি লোৱা: মৰিচা সেউজীয়া হ'লে ছিঙিব লাগে নহ'লে পকিবলৈ গছজোপাৰ ওপৰত থৈ দিব লাগে। মৰিচাৰ পকি উঠাৰ পিছত ৰং নিৰ্ভৰ কৰে জাতৰ ওপৰত। অধিক চপোৱাৰ বাবে ১৫ দিনৰ ব্যৱধানত চপোৱাৰ সময়ত ইউৰিয়া @ ১০ গ্ৰাম প্ৰতি লিটাৰ আৰু দ্ৰৱণীয় K @ ১০ গ্ৰাম প্ৰতি লিটাৰ পানীত (প্ৰতিটোৰ ১% দ্ৰৱণ) স্প্ৰে কৰিব লাগে। পেকিঙৰ বাবে মৰিচা পকিলে আৰু ৰঙা ৰঙৰ হ'লে ছিঙিব লাগে। শুকুৱাবলৈ ব্যৱহাৰ কৰা মৰিচা সম্পূৰ্ণ পকিলেহে ছিঙিব লাগে। প্ৰথমে মৰিচা শুকুৱাই লোৱা হয়, তাৰ পিছত আকাৰৰ ভিত্তিত ভাগ কৰাৰ পিছত পেক কৰি মজুত কৰা হয়।

বি:দ্ৰ:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন বতৰ, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে উপৰোক্ত তথ্য সলনি হ'ব পাৰে।

মরিচ

জাত:- ক্রান্তি, লং মন্টেরে, রেবতী, শক্তি, দুর্বাসা, সুবর্ণ, বৈশালী, নির্বাচন-১০১, নির্বাচন-২০২, পুসা জ্বালা, জেলা-৪।

জলবায়ু: মরিচ একটি গরম মৌসুমের সবজি। যেখানে বার্ষিক বৃষ্টিপাত ৬০-১৫০ সেমি হয় সেখানে এটি সফলভাবে চাষ করা যেতে পারে। অতিরিক্ত বৃষ্টিপাত এর ক্ষতি করে। স্বাভাবিকের উপরে এবং নীচে তাপমাত্রা উভয়ই এর ফলন হ্রাস করে। ফুল ফোটার সময় গরম এবং শুষ্ক বাতাস ফলন হ্রাস করে যার ফলে ফুল এবং ফল ঝরে পড়ে।

মাঠ প্রস্তুতি: ৪-৫টি গভীর চাষ করে ক্ষেতটি ভালভাবে প্রস্তুত করুন। একই সাথে, প্রতি একরে ১০ টন হারে ভালভাবে পচা গোবর সার ব্যবহার করুন। যদি সার ভালভাবে পচা না হয়, তাহলে উইপোকাকার আক্রমণের ঝুঁকি থাকবে।

মাটি: পুষ্টিতে সমৃদ্ধ বেলে-দোআঁশ মাটি এর জন্য আদর্শ। মাটিতে অক্সিজেনের অভাব এর ফলন হ্রাস করে। তাই, জমিতে ভালো নিষ্কাশন ব্যবস্থা থাকা উচিত।

বীজ শোধন: - রিডোমিল গোল্ড ০২ গ্রাম / কেজি দিয়ে বীজ আর্দ্র করুন এবং আধা ঘন্টা ছায়ায় শুকিয়ে নিন এবং তারপর বপন করুন। নার্সারিতে স্যাঁতসেঁতে হওয়া রোধ করতে, ২০ গ্রাম রিডোমিল গোল্ড ১০ লিটার জলে ১০ দিনের ব্যবধানে দুবার দিতে হবে।

ক্ষেত প্রস্তুতি এবং চারা রোপণের সময়: চারা রোপণের জন্য, নার্সারি বেডগুলি উঁচু হওয়া উচিত এবং নিষ্কাশনের সুবিধা থাকা উচিত। এই ধরনের বেডের মাটি ভালভাবে চাষ করে ভঙ্গুর করে তুলতে হবে। বর্ষাকালীন মরিচ চাষের জন্য, মে-জুন মাসে নার্সারিতে বীজ বপন করতে হবে। জুনের মাঝামাঝি থেকে জুলাইয়ের মাঝামাঝি পর্যন্ত চারা রোপণ করতে হবে। শীতকালীন ফসলের জন্য, বীজ বপনের সময় নভেম্বর। ফেব্রুয়ারির দ্বিতীয় পক্ষকালে চারা রোপণ করা হয়।

বীজের পরিমাণ: হাইব্রিড জাতের জন্য, প্রতি একরে বীজের পরিমাণ ৮০-১০০ গ্রাম হওয়া উচিত।

রোপণের কৌশল এবং সময় - মরিচ বর্ষা, শরৎ এবং গ্রীষ্ম, এই তিন ঋতুতেই রোপণ করা যায়। তবে মরিচের প্রধান ফসল খরিফ (জুন-অক্টোবর) মাসে প্রস্তুত করা হয়। জুন-জুলাই মাসে রোপণ করা হয়, শরৎকালে সেপ্টেম্বর-অক্টোবরে রোপণ করা হয় এবং ফেব্রুয়ারি-মার্চ মাসে গ্রীষ্মকালীন ফসল রোপণ করা হয়।

রোপন: ২৫ থেকে ৩৫ দিন পর গাছগুলি রোপণের জন্য প্রস্তুত হয়ে যায়। শীত ও গ্রীষ্মকালে যথাক্রমে ৭৫ x ৬০ সেমি, ৬০ সেমি x ৬০ সেমি এবং ৬০ x ৪৫ সেমি দূরত্বে রোপণ করা উচিত।

রাসায়নিক সার প্রয়োগের মাত্রা এবং সময়কাল

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

এছাড়াও প্রতি হেক্টরে ৫০ কেজি ম্যাগনেসিয়াম সালফেট + ২৫ কেজি জিঙ্ক সালফেট + ৫ কেজি বোরন ব্যবহার করুন।

রোগ ও পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ রাসায়নিক ওষুধের মাত্রা এবং সময়কাল

সারের পাশাপাশি, প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি ব্যবহার করুন। এই অনুপাত ২১ দিনের জন্য চোষা পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা দেয়।

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

সেচ: ভালো ফলনের জন্য নিয়মিত এবং সাবধানে সেচ প্রয়োজন। রোপণের পর প্রথম দিনগুলিতে আর্দ্রতার অভাব ফলনে উল্লেখযোগ্য হ্রাস ঘটায়। দুটি সেচের মধ্যে ব্যবধান আবহাওয়া এবং মাটির ধরনের উপর নির্ভর করে।

আগাছা দমন: আগাছা দমন কেবল ক্ষেতকে আগাছামুক্ত করে না, বরং এর দ্বারা ব্যবহৃত পুষ্টি উপাদানও মরিচ গাছ ব্যবহার করে এবং মরিচ তাদের দ্বারা সৃষ্ট রোগ এবং পোকামাকড় থেকে সুরক্ষিত থাকে। দুবার হাতে আগাছা দমন এবং তিনবার নিড়ানি দমন করা প্রয়োজন। দুবার মাটি প্রয়োগ করাও বাঞ্ছনীয়।

ফল দমন: মরিচ সবুজ হয়ে গেলে ছেকে ফেলা উচিত, অন্যথায় পাকার জন্য গাছে রেখে দেওয়া উচিত। পাকার পরে মরিচের রঙ জাতের উপর নির্ভর করে। বেশি ফসল কাটার জন্য, ফসল কাটার সময় ১৫ দিনের ব্যবধানে প্রতি লিটারে ১০ গ্রাম ইউরিয়া এবং প্রতি লিটার পানিতে ১০ গ্রাম দ্রবণীয় K (প্রতিটির ১% দ্রবণ) স্প্রে করুন। প্যাকিংয়ের জন্য, মরিচ পাকা এবং লাল রঙের হলে ছেকে নিন। শুকানোর জন্য ব্যবহৃত মরিচ সম্পূর্ণ পাকার পরেই ছেকে নেওয়া উচিত। প্রথমে মরিচ শুকানো হয়, তারপর আকারের ভিত্তিতে বাছাই করার পরে, সেগুলি প্যাক করে সংরক্ষণ করা হয়।

বিঃদ্রঃ:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষা-নিরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন আবহাওয়া, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরোক্ত তথ্য পরিবর্তিত হতে পারে।

ਮਿਰਚ

ਕਿਸਮਾਂ:- ਕ੍ਰਾਂਤੀ, ਲੌਂਗ ਮੋਟੇਰੀ, ਰੇਵਤੀ, ਸ਼ਕਤੀ, ਦੁਰਵਾਸਾ, ਸੁਵਰਨਾ, ਵੈਸ਼ਾਲੀ, ਸਿਲੈਕਸ਼ਨ-101, ਸਿਲੈਕਸ਼ਨ-202, ਪੂਸਾ ਜਵਾਲਾ, ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ-4।

ਜਲਵਾਯੂ: ਮਿਰਚ ਇੱਕ ਗਰਮ ਮੌਸਮ ਦੀ ਸਬਜ਼ੀ ਹੈ। ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਉਹਨਾਂ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਸਫਲਤਾਪੂਰਵਕ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜਿੱਥੇ ਸਾਲਾਨਾ ਵਰਖਾ 60-150 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਵਰਖਾ ਇਸਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਆਮ ਨਾਲੋਂ ਉੱਪਰ ਅਤੇ ਹੇਠਾਂ ਤਾਪਮਾਨ ਦੋਵੇਂ ਇਸਦੀ ਉਪਜ ਨੂੰ ਘਟਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਫੁੱਲ ਆਉਣ ਦੇ ਸਮੇਂ ਗਰਮ ਅਤੇ ਸੁੱਕੀਆਂ ਹਵਾਵਾਂ ਫੁੱਲ ਅਤੇ ਫਲ ਡਿੱਗਣ ਕਾਰਨ ਉਪਜ ਨੂੰ ਘਟਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।

ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: 4-5 ਡੂੰਘੀਆਂ ਵਾਹੁਣ ਨਾਲ ਖੇਤ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਿਆਰ ਕਰੋ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ, 10 ਟਨ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਦੀ ਦਰ ਨਾਲ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗੋਬਰ ਖਾਦ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ। ਜੇਕਰ ਖਾਦ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੜੀ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਤਾਂ ਦੀਮਕ ਦੇ ਹਮਲੇ ਦਾ ਖਤਰਾ ਹੋਵੇਗਾ।

ਮਿੱਟੀ: ਪੇਸ਼ਕ ਤੱਤਾਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਰੇਤਲੀ-ਦੇਮਟ ਮਿੱਟੀ ਇਸਦੇ ਲਈ ਆਦਰਸ਼ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਆਕਸੀਜਨ ਦੀ ਘਾਟ ਇਸਦੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਨੂੰ ਘਟਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਇਸਦੇ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਵਧੀਆ ਨਿਕਾਸ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ: - ਬੀਜ ਨੂੰ ਰਿਡੋਮਿਲ ਗੋਲਡ 02 ਗ੍ਰਾਮ / ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਨਾਲ ਗਿੱਲਾ ਕਰੋ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਅੱਧੇ ਘੰਟੇ ਲਈ ਛਾਂ ਵਿੱਚ ਸੁਕਾਓ ਅਤੇ ਫਿਰ ਬੀਜੋ। ਨਰਸਰੀ ਵਿੱਚ ਗਿੱਲੇ ਹੋਣ ਤੋਂ ਰੋਕਣ ਲਈ, 20 ਗ੍ਰਾਮ ਰਿਡੋਮਿਲ ਗੋਲਡ 10 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ 10 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਦੋ ਵਾਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਅਤੇ ਬੀਜਾਂ ਲਈ ਸਮਾਂ
ਪੌਦੇ ਉਗਾਉਣ ਲਈ, ਨਰਸਰੀ ਬੈੱਡ ਉੱਚੇ ਹੋਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਨਿਕਾਸ ਦੀਆਂ ਸਹੂਲਤਾਂ ਹੋਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ। ਅਜਿਹੇ ਬੈੱਡਾਂ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਾਹੁਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਭੂਰਭੂਰਾ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬਰਸਾਤੀ ਮਿਰਚਾਂ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ, ਬੀਜ ਮਈ-ਜੂਨ ਦੇ ਮਹੀਨੇ ਵਿੱਚ ਨਰਸਰੀ ਵਿੱਚ ਬੀਜਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਪੌਦੇ ਅੱਧ ਜੂਨ ਤੋਂ ਅੱਧ ਜੁਲਾਈ ਤੱਕ ਲਗਾਏ ਜਾਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਸਰਦੀਆਂ ਦੀ ਫਸਲ ਲਈ, ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਦਾ ਸਮਾਂ ਨਵੰਬਰ ਹੈ। ਪੌਦੇ ਫਰਵਰੀ ਦੇ ਦੂਜੇ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਵਿੱਚ ਲਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ: ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਕਿਸਮਾਂ ਲਈ, ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ 80-100 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦੀ ਤਕਨੀਕ ਅਤੇ ਸਮਾਂ - ਮਿਰਚ ਤਿੰਨੋਂ ਮੌਸਮਾਂ, ਬਰਸਾਤੀ, ਪਤਝੜ ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਵਿੱਚ ਲਗਾਈ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਮਿਰਚ ਦੀ ਮੁੱਖ ਫਸਲ ਸਾਉਣੀ (ਜੂਨ-ਅਕਤੂਬਰ) ਵਿੱਚ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਿਸਦੀ ਬਿਜਾਈ ਜੂਨ-ਜੁਲਾਈ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਪਤਝੜ ਦੀ ਫਸਲ ਸਤੰਬਰ-ਅਕਤੂਬਰ ਵਿੱਚ ਲਗਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਦੀ ਫਸਲ ਫਰਵਰੀ-ਮਾਰਚ ਵਿੱਚ ਲਗਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟੇਸ਼ਨ: ਪੌਦੇ 25 ਤੋਂ 35 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਬਿਜਾਈ ਸਰਦੀਆਂ ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਮਵਾਰ 75 x 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ, 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ x 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਅਤੇ 60 x 45 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਮਿਆਦ

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ 50 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਮੈਗਨੀਸ਼ੀਅਮ ਸਲਫੇਟ + 25 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਜ਼ਿੰਕ ਸਲਫੇਟ + 5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੋਰਾਨ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਵਰਤੋ।

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਮਿਆਦ

ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ, ਫਰਟੇਰ (ਡੂਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਵਰਤੋ। ਇਹ ਅਨੁਪਾਤ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraco nose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

ਸਿੰਜਾਈ: ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲਈ ਨਿਯਮਤ ਅਤੇ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਸਿੰਜਾਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸ਼ੁਰੂਆਤੀ ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਨਮੀ ਦੀ ਘਾਟ ਪੈਦਾਵਾਰ ਵਿੱਚ ਕਾਫ਼ੀ ਕਮੀ ਲਿਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਦੋ ਸਿੰਜਾਈਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਅੰਤਰਾਲ ਮੌਸਮ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਨਦੀਨ-ਮੁਕਤ: ਨਦੀਨ-ਮੁਕਤ ਕਰਨ ਨਾਲ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਖੇਤ ਨਦੀਨ-ਮੁਕਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤ ਵੀ ਮਿਰਚਾਂ ਦੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਮਿਰਚਾਂ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਬਚਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਦੋ ਵਾਰ ਹੱਥੀਂ ਨਦੀਨ-ਮੁਕਤ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਤਿੰਨ ਵਾਰ ਗੋਡੀ ਕਰਨਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਦੋ ਵਾਰ ਲਗਾਉਣ ਦੀ ਵੀ ਸਲਾਹ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਫਲਾਂ ਦੀ ਤੇੜਨ:

ਮਿਰਚਾਂ ਨੂੰ ਹਰਾ ਹੋਣ 'ਤੇ ਤੇੜਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕਣ ਲਈ ਪੌਦੇ 'ਤੇ ਛੱਡ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪੱਕਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮਿਰਚਾਂ ਦਾ ਰੰਗ ਕਿਸਮਾਂ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਵਧੇਰੇ ਕਟਾਈ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, 15 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਕਟਾਈ ਦੇ ਸਮੇਂ ਯੂਰੀਆ @ 10 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਅਤੇ ਘੁਲਣਸ਼ੀਲ K @ 10 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ (ਹਰੇਕ ਦਾ 1% ਘੋਲ) ਦਾ ਛਿੜਕਾਅ ਕਰੋ। ਪੈਕਿੰਗ ਲਈ, ਮਿਰਚਾਂ ਨੂੰ ਉਦੋਂ ਤੋੜੋ ਜਦੋਂ ਉਹ ਪੱਕ ਜਾਣ ਅਤੇ ਲਾਲ ਰੰਗ ਦੇ ਹੋਣ। ਸੁਕਾਉਣ ਲਈ ਵਰਤੀਆਂ ਜਾਣ ਵਾਲੀਆਂ ਮਿਰਚਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੱਕਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਤੇੜਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਮਿਰਚਾਂ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ ਸੁੱਕਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਫਿਰ ਆਕਾਰ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਛਾਂਟਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੈਕ ਅਤੇ ਸਟੋਰ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿੱਚ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੌਸਮ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਦਲ ਸਕਦੀ ਹੈ।